www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाषाओं एवं धर्मों का प्रशिक्षण विद्यालय

श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाषाओं एवं धर्मों का प्रशिक्षण विद्यालय

पारस्परिक आदान-प्रदान और विचार-विनिमय के द्वारा ही मानवी प्रगति संभव हुई हैं और सहकार की गाड़ी चल रही है। इस प्रयोजन में भाषा का प्रयोग होता है। मौखिक वार्तालापमें भी और पत्रिकाओंतथा साहित्य आदि द्वारा भी। इन सभी का संयुक्त स्वरूप भाषा होता है। वाणी और लेखनी के माध्यम से यह अभिव्यक्तियाँ प्रकट होतीं और एक से अनेकों तक पहुँचती रहती हैं। भाषा न हो तो मनुष्य को भी अन्य प्राणियों की तरह गूँगा बहरा रहना पड़े। फलतः पिछड़ेपन से किसी भी प्रकार छुटकारा न मिले। जब तक भाषा का आविर्भाव नहीं था तब तक मनुष्य को भी नर वानर वर्ग में रहना पड़ा।

भाषा एक सीमा है जिसमें मनुष्यों के बीच परस्पर विचार विनिमय चलता है। इस सीमा से बाहर होते ही फिर गूँगे-बहरे जैसी स्थिति बन जाती है। एक व्यक्ति बंगला बोले दूसरा तेलगू तो वे अपने-अपने ढंग के शब्दोच्चार करते रहने पर भी उनका अर्थ न समझ पाने के कारण विज्ञ विद्वान होते हुए भी गूँगे बहरे की स्थिति में रहेंगे और इशारों से जितना काम चल सकेगा उतना चलायेंगे।

यह भाषा संबंधी कठिनाई ज्ञान-संवर्धन की दृष्टि से भारी अवरोध उत्पन्न करती है। जो जिस या जिन भाषाओं को जानता है उसी परिधि में रहने वालों के साथ संबंध रखने, विचार-विनिमय करने में समर्थ रहता है। साथ ही उसी भाषा में लिखे या छपे साहित्य का लाभ उठा पाता है। देशों के सीमा विभाजन से भी बड़ी कठिनाई यह है कि भाषा विभाजन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कारण लोग अपने छोटे-छोटे भाषाई क्षेत्रों में कैद रहे और बाहर निकलते ही गूँगे-बहरे बन चले। अन्य देशों में जाने के लिए वीसा मिल जाता है किन्तु भाषाई सीमा-बन्धन से बाहर निकल सकने की तो कहीं कोई गुजाइश है ही नहीं।

जब दुनिया एक थी, सर्वत्र निर्बाध आवागमन की छूट रही होगी। कोई कहीं भी आ जा सकता होगा, कहीं बस या निर्वाह कर सकता होगा, तब संसार कितना सुखी रहा होगा। इस प्रकार जब संसार भर में एक संस्कृत भाषा बोली और समझी जाती रही होगी तब भी लोग कितनी राहत, कितनी आत्मीयता अनुभव करते रहे होंगे।

आज विज्ञान ने प्रेस, अखबार तार, रेडियो आदि की कितनी ज्ञान-वर्धक सुविधाएँ उत्पन्न कर दी हैं किन्तु भाषाई सीमा बंधन के कारण वे सब भी निरर्थक हैं। दो भाषा-भिन्नता वाले मूर्धन्य विद्वान भी परस्पर मिलने पर एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान नहीं कर सकते। वक्तृत्व-कला जानने पर भी, नितान्त महत्व की आवश्यकता पड़ने पर भी वे इशारे भर करने के अतिरिक्त और कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं होते। एक भाषा में छपा ग्रंथ कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, अन्य भाषा वाले के लिए रद्दी के बराबर है किसी भाषा में प्रकाशित हुआ ज्ञान अपने ही क्षेत्र तक सीमित रहेगा। पड़ोस वाले भी इस विभेद के कारण तब तक कुछ लाभ न उठा सकेंगे जब तक वह अनुवादित होकर उस भाषा में प्रकाशित न हो। इसमें सैकड़ों वर्ष भी लग सकते हैं। ऐसी दशा में पास-पड़ोस में रहने वालों को भी उन प्रतिपादनों का परिचय प्राप्त करने से वंचित ही बने रहना पड़ेगा।

भाषाएँ घटने लगें तो मनुष्य के ज्ञान और सम्पर्क-क्षेत्र का उसी अनुपात में विस्तार होने लगेगा। एक विश्वभाषा बन सके तो विश्व परिवार बनने की सुखद संभावनाओं के कार्यान्वयन में फिर कोई बड़ा अवरोध न रहेगा। इन दिनों सीमाबंधन और विलगाव का प्रचलन सर्वत्र अनेकानेक संकट एवं विग्रह खड़े कर रहा है। विभेद की सभी दीवारें गिरनी चाहिए। विश्वराष्ट्र विश्वभाषा, विश्वसंस्कृति और विश्वव्यवस्था में एकता एकरूपता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होने की बात सोचनी चाहिए और उस दिशा में जितना कुछ कदम बढ़ सकना संभव हो उतना प्रयास वर्तमान परिस्थितियों में भी करना चाहिए।

अपने देश में संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाएँ १५ हैं। इसके अतिरिक्त उपभाषाएँ क्षेत्रीय बोलियां इतनी अधिक हैं कि उनके कारण पारस्परिक विचार-विनिमय और आदान-प्रदान में भारी अड़चन उत्पन्न होती है। इस भाषायी विलगाव ने एक प्रकार की साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर लिया है। विलगाव जन्य कलह ने विषवृक्ष के रूप में पनपना आरम्भ कर दिया है। विवाह-शादियाँ अपने-अपने भाषाई क्षेत्रों में होती हैं। फलतः हमारी विशालता सामाजिकता, राष्ट्रीयता सिकुड़-सिकुड़ कर छोटे-छोटे क्षेत्रों में सीमाबद्ध होती चली जा रही है। विभेदों को एकता के सूत्र में बाँधना हो तो हमें भाषायी एकता की दिशा में सोचना चाहिए और जो बन पड़े उसे अविलम्ब करने के लिए प्रयत्नरत होना चाहिए।

राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित कर दी गई है पर उस निर्धारण को मान्यता तभी मिलेगी जब सभी भारतीय उसे सीखें, समझें और अपनायें। इसके लिए सभी भाषायी क्षेत्रों के विज्ञजनों को चाहिए कि वे आरंभिक बालशिक्षा मातृभाषा में सम्पन्न करने के उपरान्त ऊँची शिक्षा भी राष्ट्रभाषा में ही उपलब्ध करने की तैयारी करें। मातृभाषा के साथ साथ राष्ट्रभाषा को भी ज्ञान, उत्साह और सम्मान के साथ चलते रहना आवश्यक है।

इस सन्दर्भ में हिन्दी भाषियों की भी एक विशेष जिम्मेदारी है कि वे अपनी ओर से कदम बढ़ायें और देश की प्रचलित भाषाओं में से जितना अधिक सम्भव हो सके उतना सीखें। विशेषतया अपने प्रान्त में तथा लगे हुए प्रान्त में बोली जाने वाली भाषाओं को सीखने का तो प्रयत्न करें ही। इससे उनका सम्पर्क क्षेत्र विस्तृत होगा और आदान-प्रदान एवं आत्मभाव का दायरा बढ़ेगा अन्य भाषा-भाषियों से जिस प्रकार हिन्दी सीखने के लिए कहा जाता है उसी प्रकार यह अनुरोध एवं प्रयत्न भी चलना चाहिए कि हिन्दी भाषी भी देश की अधिकाधिक भाषा सीखने का प्रयत्न करें। दोनों ओर से प्रयत्न चलने पर दूरी कम करने में अधिक सहायता मिलेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाषायी क्षेत्र में प्रवेश करने की तैयारी उन्हें तो करनी ही चाहिए जो नवसृजन का, नैतिक सांस्कृतिक पुनरुत्थान का स्वप्न साकार करने में प्रयत्नरत हैं। प्रज्ञा अभियान का शुभारंभ हिन्दी भाषी क्षेत्रों से; हिन्दू धर्मावलम्बियों से हुआ है। कारण कि आन्दोलन के संचालकों का निजी ज्ञान हिन्दी प्रधान है और उनका सम्पर्क प्रधानतया हिन्दू धर्मावलम्बियों के साथ रहा है। सुविधा एवं लाचारी की दृष्टि से श्री गणेश छोटे रूप में या छोटे क्षेत्र में बन पड़ा इसमें हर्ज नहीं पर अब उसका विस्तार तो होना ही चाहिए। अन्यथा कूप-मण्डूक की तरह अपनी गतिविधियां उतने ही क्षेत्र में सीमित होकर रह जाएंगी। जबकि आवश्यकता व्यापक क्षेत्र में प्रवेश करने की है। युगचेतना का आलोक वितरण यों विश्व के समस्त भाषायी क्षेत्रों में होना चाहिए। पर आरम्भ में उसका विस्तार अपने देश में बोली जाने वाली भाषाओं में तो चलना ही चाहिए।

ईसाई मिशनों ने समस्त संसार की प्रायः ६०० भाषाओं में बाइबिल तथा बड़े ग्रन्थों तथा छोटी पुस्तिकाओं के प्रचार साहित्य का प्रकाशन किया है। यही कारण है कि उस धर्म का परिचय तथा प्रभाव संसार के कोने-कोने में पहुँचा है और एक सहस्राब्दी के भीतर संसार का एक तिहाई जन समुदाय उस धर्म में दीक्षित हुआ है। प्रचारक पादरी संसार भर में भेजे जाते हैं। जिन्हें जिस देश में जाना होता है वहां की भाषा पहले सीखनी पड़ती है।

आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म का प्रसार समस्त एशिया में हुआ था। इससे बाहर भी योरोप अफ्रीका में वह आलोक पहुँचा था। इसके लिए नालन्दा विश्व विद्यालय में भारतीय भाषाएँ तथा संस्कृतियां पढ़ाई जाती थीं। इस योग्यता को अर्जित करने के उपरान्त परिव्राजक प्रचारकों को उन-उन भाषाई क्षेत्रों में भेजा जाता था। देश से बाहर की भाषाओं को पढ़ाने का प्रबन्ध तक्षशिला विश्व विद्यालय में था। वहाँ एशिया, योरोप अफ्रीका की भाषाएँ तथा संस्कृतियाँ पढ़ाई जाती थीं इस अध्ययन के उपरान्त ही प्रचारक उन देशों में जाते थे।

इस प्रकार का प्रबन्ध किये बिना किसी मिशन को देश—देशान्तरों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यापक नहीं बनाया जा सकता है । प्रज्ञा अभियान को देश व्यापी,विश्वव्यापी बनाना है उसे भी देश की सभी प्रमुख भाषाओं का ज्ञान कराने की प्रशिक्षण व्यवस्था बनानी होगी । अन्य देशों में यह प्रकाश पहुँचाना है तो उन देशों की भाषाएँ भी पढ़ानी पड़ेंगी । अन्यथा वहाँ के निवासियों से सम्पर्क साधना आदान-प्रदान का उपक्रम बनाना संभव ही न हो सकेगा ।

इस दिशा में कदम बढ़ाया गया है । शांतिकुञ्ज में भाषायी विद्यालय की नींव रखी गई है । हिन्दी भाषी क्षेत्रों से लगी हुई भाषाएँ सबसे पहले ली गई हैं । बंगला, उड़िया, गुजराती, मराठी और पंजाबी, यह पांच भाषाएँ हिन्दी भाषी क्षेत्रों से मिलती हैं । इनके अध्ययन-अध्यापन का प्रबन्ध किया गया है । यह पहला चरण पूरा होते ही दक्षिण भारत की चार भाषाएँ तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़ को भी इस प्रशिक्षण में सम्मिलित किया जायगा । इसके उपरान्त असमिया आदि भाषाओं का नम्बर आता है । उर्दू की लिपि भर भिन्न है । भाषा तो उसकी भी हिन्दी ही है ।

इन भाषाओं की जानकारी प्राप्त करके, उन क्षेत्रों की संस्कृति, प्रथा, परम्परा समझने के उपरान्त प्रज्ञा अभियान के कार्यकर्ता वहां पहुँचकर स्थानीय जनता के साथ भली प्रकार विचार-विनिमय कर सकेंगे और युगान्तरीय चेतना से उन क्षेत्रों को अवगत अनुप्राणित कर सकेंगे ।

इन भाषाओं में प्रज्ञा साहित्य तथा युग संगीत अनुवादित करके प्रकाशित करने की बड़ी योजना है जो आँशिक रूप से कई भारतीय भाषाओं में तथा अंग्रेजी में आरम्भ भी हो गई है । साधन जुटते ही इस प्रयास को तेजी से आगे बढ़ाया जायगा ।

स्पष्ट है कि प्रज्ञा अभियान की विचारक्रान्ति योजना को हिन्दू धर्म से आरम्भ तो किया गया है पर इसी एक वर्ग तक उसे सीमित नहीं रखा जा सकता । लोकमानस के परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन की योजना विश्वव्यापी है । उसे संसार भर के सभी देशों और धर्मों तक पहुँचाया जाना है ।

सब धर्मों को एक मंच पर एकत्रित करने और न्यूनतम कार्यक्रम बना-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर साथ-साथ कदम उठाने की योजना का अनेकों ने प्रयोग परीक्षण किया है, वह सफल न हो सकी। अन्य धर्मों को मिटाकर एकमात्र अपना ही धर्म रखने की महत्वाकांक्षा भी बुरी तरह असफल हो गई। दमन और प्रलोभन भी वह कार्य न कर सके इसका इतिहास साक्षी है। अपना प्रयास यह है कि नवयुग अवतरण के सामर्थक अपने-अपने समुदाय में काम करें अभ्यस्त धर्म के कथा-पुराणों, शास्त्रों एवं प्रतिपादनों से वे तत्व ढूँढ़ें जो एकता,समता और शुचिता की ओर लोकमानस को धकेलते हों समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के गुण, कर्म, स्वभाव उभारते हों। चिंतन, चरित्र और व्यवहार में शालीनता और आत्मीयता की अभिवृद्धि करते हों। ऐसे प्रतिपादनों से हर धर्म-सम्प्रदाय भरा पड़ा है। ध्यान उन्हीं पर देना है, खोजना उन्हीं को है, प्रचार–प्रसार उन्हीं का करना है यह कार्य सभी धर्म-सम्प्रदाय के सृजन शिल्पी अपने प्रभाव संपर्क वाले क्षेत्र में अपने शास्त्र-पुराणों और परम्परा प्रचलनों के साथ संगति बिठाते हुए भली प्रकार करते रह सकते हैं।

इस हेतु प्रज्ञा पुराण का एक खण्ड भी प्रकाशित होने जा रहा है। साहित्य भी इस प्रयोजन के लिए छापा जा रहा है ताकि उस आधार पर विभिन्न धर्मावलम्बी विचारणील अपने लोगों के बीच इस स्तर का धर्म प्रचार आरम्भ कर सकें जिसके सहारे एकता आत्मीयता को लक्ष्य मानकर सभी अपनी-अपनी पगडंडियों का आश्रय लेते हुए चल पड़ें। उस स्थान पर पहुँचें जहां मनुष्यमात्र को एक परिवार के सदस्य बनकर रहने का सुनिश्चित निर्धारण करना है। एक दूसरे के दुःख-दर्द में साथी-सहयोगी बनकर रहना है। हिलमिल कर रहना और मिल-बांट कर खाना है। प्रज्ञायुग में विश्वपरिवार के सिद्धान्त को अपनाया जाना है। विश्वराष्ट्र, विश्वभाषा, विश्व धर्म एवं विश्व–व्यवस्था के अन्तर्गत सभी को विश्वनागरिक बनकर रहना है।

प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत अभी-अभी दो स्थापनाएँ की गई हैं। एक भाषा विद्यालय, दूसरा-धर्म-विद्यालय। भाषा विद्यालय में अंग्रेजी सहित अन्य भारतीय भाषाओं का प्रशिक्षण आरम्भ कर दिया गया है। ताकि इस प्रशिक्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को प्राप्त कर देश के किसी भाग में मिशन के प्रचारक पहुँच सकें और नव चेतना का संचार कर सकें।

धर्म-विद्यालय में भारत में प्रचलित प्रायः सभी धर्मों में से ऐसे तत्त्व खोजे और पढ़ाए जाते रहेंगे जिनमें उनके अनुयायी अपनी मान्यताओं को अपनाए रहकर भी मानवी सद्भावना और एकता की दिशा में सोचने एवं बढ़ने लगें। इस स्तर का साहित्य प्रकाशित करने की योजना भी इन्हीं दिनों हाथ में ली जा रही है। इस विद्यालय में किसी भी धर्म के प्रशिक्षार्थी प्रवेश पा सकेंगे। अपने धर्म के सद्भाव-संवर्धक तत्त्वों को अधिक अच्छी तरह समझ सकेंगे और अपने लोगों के बीच अपने ढंग से प्रचार-कार्य करते हुए उन्हें एकात्मता के पथ पर अग्रसर कर सकेंगे।

भाषा-विद्यालय एवं धर्म-विद्यालय का कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज में चल पड़ा है। शिक्षण क्रम आरम्भ हो गया है। अब क्रमशः उसका विस्तार होता चला जायगा। इस प्रयास में रुचि लेने वाले परामर्श लेते और सम्पर्क साधते रहें।

क्र० २२४ /प्र०युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा, मूल्य ४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org